मधुबन ओम् शान्ति अंक 289 अगस्त 2016

पत्र-पुष्प

निमित्त टीचर्स तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनों प्रति मधुर याद पत्र

(18-07-16)

परम पवित्र, परमप्यारे बापदादा के अति लाडले, सदा अतीन्द्रिय सुख के झूले में झूलने वाले, प्रभु पालना में पलने वाले, विश्व कल्याण की सेवा में उपस्थित सर्व निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सभी परमात्म स्नेही विश्व सेवाधारी भाई बहिनें, ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर यादप्यार के साथ रक्षाबंधन तथा जन्माष्टमी के पावन पर्व की सबको बहुतबहुत हार्दिक बधाईयां।

विश्व के रक्षक प्यारे बापदादा ने हम सबको ऐसे स्नेह के पवित्र रक्षा सूत्र में बांध दिया है जो एक एक बाबा का बच्चा स्व-रक्षक, मर्यादा रक्षक, परिवार रक्षक और विश्व रक्षक बन गया है। सारे चक्र में संगम के यह 100 साल कितने अच्छे हैं! भले दुनिया में रहते हैं परन्तु दुनिया से न्यारे और बाबा के प्यारे, व्यक्ति, वैभव के लगाव झुकाव से फ्री हैं। सच्चाई और प्रेम का भण्डारा सदा भरपूर है, इसलिए काल-कटंक सब दूर हैं। फिर मेरा बाबा कर्मों की गुह्य गति कितनी अच्छी बताता है, बच्चे जो भी कर्म करते हो तो अन्दर से आवाज निकले जैसा कर्म मैं करूंगी, मुझे देख और करेंगे। कर्म बड़े बलवान हैं, बाबा सर्वशक्तिवान है। स्वयं भाग्यविधाता हमारा साथी हो गया है और सारे ज्ञान का सार है तुम साक्षी हो करके अपना पार्ट प्ले करो। यह जो मीठे बाबा के शब्द हैं वह लाइफ में बहुत यूज़फुल है। बाबा ने अन्तर्मुखी सदा सुखी रहना सिखाया है। बाह्यमुखता में टाइम वेस्ट होता है। अभी संगम का यह समय बड़ी कमाई करने का है। जो भी कारोबार है, उसमें मनी और टाइम वेस्ट नहीं करना है। एक के नाम से एकानामी से इतना बड़ा यज्ञ चल रहा है। बाबा एक है पर बड़ा वन्डरफुल है। हमें दाल रोटी के अलावा कुछ चाहिए क्या.. सिर्फ सिम्पल रहकर सैम्पुल हो रहना है। सिम्पल रहना सदा सन्तुष्ट रहना। सभी गुणों में सन्तुष्ट रहने का जो गुण है वह बहुत वैल्युबूल है। सदा सन्तुष्ट, नो प्रॉब्लम। हर कार्य सफल हो रहा है। सिर्फ हम सब एक दो को देखकर लाइट बनें, माइट खींचे और जो हमारे से कार्य-व्यवहार बाबा कराता है, वह इशारे से होता रहे।

देखो, अभी हमारा ट्रेवेलिंग करने का पार्ट पूरा हुआ। अभी शान्तिवन में बैठे विश्व में शान्ति फैलानी है। आप सब क्या कर रहे हो? भले सेवा करो, आप नहीं करेंगे तो कौन करेगा! मैं तो इतना नहीं करती हूँ, जितना पहले करती थी। अभी भी आप सब रक्षाबंधन पर सबको पवित्र और योगी बनने का शुभ सन्देश देते हुए राखी बांधेंगे। कितनी आत्मायें इससे स्नेह सम्बन्ध में आती हैं। आप सबने हमारे पास भी बहुत अच्छी स्नेह भरी राखियां भेजी हैं। यहाँ भी कई बहिनें प्यार से मिलन मनाते राखी बांधकर जाती हैं, सबको रिटर्न में बापदादा और दादियों की दुआयें मिलती रहती हैं। मीठे बाबा ने कितना सुन्दर अलौकिक परिवार बनाया है, एक दो को देख-देख दिल हर्षाता रहता है। अन्दर से यही गीत निकलता जिसकी रचना इतनी सुन्दर वह कितना सुन्दर होगा...। वाह बाबा! वाह आपकी अलौकिक रचना वाह! अव्यक्त वतन में होते भी कैसे बाबा अपने बच्चों की सम्भाल करता, सकाश देता, शक्ति भरता, देश विदेश में दूर बैठे हुए बच्चे भी बाबा की दिव्य पालना का अनुभव करते स्वयं को समर्थ शक्तिशाली बनाए बेहद की सेवायें कर रहे हैं। बहुत अच्छे अच्छे समाचार सब तरफ से मिलते रहते हैं।

अच्छा - अब तो हमारी नई स्वर्णिम दुनिया आई कि आई। सब कितना खुशी उमंग से भविष्य राजकुमार श्रीकृष्ण का जन्म दिन मनाते हैं, रास लीला रचाते हैं। तो सभी को ऐसे पावन पर्व जन्माष्टमी की भी बहुत-बहुत मुबारक हो, मुबारक हो।

ईश्वरीय सेवा में,

बी.के.जानकी

ये अव्यक्त इशारे

“मास्टर दयालु, कृपालु (मर्सीफुल) बनो”

1) आजकल आपदाओं के समय दु:खी, अशान्त आत्मायें परमात्मा के साथ-साथ शक्तियों को, देवताओं को उसमें भी गणेश वा हनुमान को ज्यादा याद करती हैं। रोज़ पुकारती हैं हे कृपालु, दयालु रहम करो, कृपा करो। सुख-शान्ति की जरा सी बूंद दे दो। तो हे शक्तियां, हे देव, दु:खियों का, प्यासी आत्माओं का आवाज सुनो। अपने बहन भाईयों पर रहम करो।

2) हे मास्टर मुक्तिदाता, अभी सबसे पहले स्व को मुक्ति दो फिर विश्व की सर्व आत्माओं को मुक्ति देने की अंचली दो। वह पुकार रहे हैं, बार-बार गीत गा रहे हैं - दु:खियों पर कुछ रहम करो...। दु:ख बढ़ता ही जा रहा है तो उन पर रहम कर उन्हें मुक्तिधाम में भेजो, इसके लिए वाणी की सेवा के साथ मन्सा सेवा बढ़ाओ।

3) आपके जड़ चित्र भी रहमदिल हैं, कोई भी चित्र के आगे जाते हैं तो यही कहते हैं मुझ पर दया करो, कृपा करो, रहम करो, मर्सी, मर्सी...जब चित्र इतने मर्सीफुल हैं तो चैतन्य में क्या होंगे! चैतन्य में तो रहम की खान हो। पहले अपने ऊपर रहम करो, फिर ब्राह्मण परिवार के ऊपर रहम करो, अगर कोई परवश है, संस्कार के वश है, कमजोर है, उस समय बेसमझ हो जाता है, तो क्रोध नहीं करो। दयालु बनो, कृपालु बनो।

4) हे बापदादा के सिकीलधे, पदम पदम वरदानों के वरदानी बच्चे! अभी संकल्प को दृढ़ करो और दृढ़ता की चाबी लगाओ, कर्मयोगी बनो। कर्मयोगी लाइफ वाले हो, लाइफ सदाकाल होती है, कभी कभी नहीं। तो अभी अपना कृपालु, दयालु, दु:खहर्ता, सुख दाता स्वरूप इमर्ज करो।

5) बापदादा ने अचानक का पाठ बहुतकाल से पढ़ाया है। तो अचानक के पहले भक्तों की पुकार तो पूरी करो। दु:खियों के दु:ख की आवाज तो सुनो। अभी हर एक छोटा बड़ा विश्व परिवर्तक, विश्व के दु:ख परिवर्तन कर सुख की दुनिया लाने वाले जिम्मेवार समझो।

6) हे मेरे दिल तख्त के अधिकारी प्यारे बच्चे! बापदादा के मन में समय प्रमाण यही आवश्यकता लगती है कि अभी भक्त आत्माओं की प्यास बुझाओ। बिचारी आत्मायें आप पूज्य आत्माओं को याद कर रही हैं - हमारे पूज्य, हमारे दयालु, कृपालु कहाँ हो! क्या हमारी पुकार सुनने नहीं आती? जरा सी खुशी, जरा सी शान्ति की अंचली तो दे दो। तो अब पुकारने वालों को अंचली देने का, मन्सा सेवा करने का समय आ गया है इसलिए सारे दिन में शक्तिशाली याद की परसेन्टेज को बढ़ाओ।

7) भिन्न-भिन्न समस्याओं के कारण, अपने मन और बुद्धि का संतुलन न होने के कारण मर्सीफुल बाप को वा अपनी-अपनी मान्यता वालों को मर्सी के लिए बहुत दु:ख से, परेशानी से पुकारते हैं। तो मर्सीफुल बाप बच्चों को कहते हैं कि बाप के सहयोगी साथी भुजाएं आप ब्राह्मण मास्टर मर्सीफुल बनो।

8) सब आपके ही भाई-बहने हैं, चाहे सगे हैं वा लगे हैं लेकिन हैं तो आपके परिवार के। अपने परिवार के अन्जान, परेशान आत्माओं के ऊपर रहमदिल बनो। दिल से रहम आये। विश्व की अन्जान आत्माओं के लिए भी रहम चाहिए और साथ-साथ ब्राह्मण-परिवार के पुरुषार्थ की तीव्रगति के लिए वा स्व-उन्नति के लिए रहमदिल की आवश्यकता है।

9) चेक करो कि मर्सीफुल बाप का बच्चा बन मैंने कितनी आत्माओं पर रहम किया? सिर्फ वाणी से नहीं, मन्सा अपनी वृत्ति से वायुमण्डल द्वारा भी आत्माओं को बाप द्वारा मिली हुई शक्तियां दो। जब थोड़े समय में सारे विश्व की सेवा सम्पन्न करनी है तो तीव्र गति से सेवा करो। जितना स्वयं को सेवा में बिज़ी रखेंगे उतना स्वयं सहज मायाजीत बन जायेंगे।

10) समय प्रति समय प्रकृति अपना सिग्नल दिखा रही है। तो जितनी प्रकृति की हलचल उतनी आपकी अचल स्थिति प्रकृति को परिवर्तन करेगी। समय प्रति समय कितनी आत्मायें दु:ख की लहर में आती हैं। तो ऐसी दु:खी आत्माओं का सहारा तो बाप और आप ही हो। तो रहम पड़ता है ना। जब प्रकृति की हलचल से आत्मायें चिल्लाती हैं, मर्सी वा रहम मांगती हैं तो आप लोगों को उनके रहम की पुकार पहुँचती तो है ना! ये छोटी-छोटी आपदायें और तड़फाती हैं, इसके लिए आप ब्राह्मण आत्मायें सम्पन्न हो जाओ तो दु:ख की दुनिया समाप्त हो जाये।

11) अब परिवर्तन की शुभ भावना को तीव्र करो। आप भी

कभी कैसे, कभी कैसे होते हो तो प्रकृति भी कभी बहुत तीव्र गति से कार्य करती, कभी ठण्डी हो जाती इसलिए अब रहम की भावना इमर्ज करो, चाहे स्व प्रति, चाहे सर्व आत्माओं के प्रति। इस रहम की भावना से विघ्न भी सहज खत्म हो जायेंगे। जहाँ रहम होगा, वहाँ तेरा-मेरा की हलचल नहीं होगी। तो अभी ये लहर फैलाओ। हर संकल्प में मर्सीफुल।

12) अपने भाई बहिनों के ऊपर भी रहमदिल बनो, रहमदिल बन सेवा करेंगे तो उसमें निमित्त भाव स्वत: ही होगा। किसी पर भी चाहे कितना भी बुरा हो लेकिन अगर आपको उस आत्मा के प्रति रहम है, तो आपको उसके प्रति कभी भी घृणा या ईर्ष्या या क्रोध की भावना नहीं आयेगी। रहम की भावना सहज निमित्त भाव इमर्ज कर देती है।

13) रहमदिल बाप के बच्चे अभी बेहद पर रहम करो। जब दूसरे पर रहम आयेगा तो अपने ऊपर रहम पहले आयेगा, फिर जो एक ही छोटी सी बात पर आपको पुरूषार्थ करना पड़ता है, वह करने की आवश्यकता नहीं होगी। मास्टर रहमदिल, मास्टर दयालु, मर्सीफुल बन जाओ। इस गुण को इमर्ज करो। तो औरों के ऊपर रहम करने से स्वयं पर रहम आपेही आयेगा।

14) इस समय आप हर एक को, आत्माओं प्रति रहमदिल और दाता बन कुछ न कुछ देना ही है, चाहे मन्सा सेवा द्वारा दो, चाहे शुभ भावना से दो, श्रेष्ठ सकाश देने की वृत्ति से दो, चाहे आध्यात्मिक शक्ति सम्पन्न बोल से दो, चाहे अपने स्नेह सम्पन्न सम्बन्ध-सम्पर्क से दो लेकिन कोई भी आत्मा वंचित नहीं रहे। दाता बनो, रहमदिल बनो।

15) बापदादा हर बच्चे का अभी मर्सीफुल स्वरूप देखने चाहते हैं। अब अपनी हद की बातें छोड़ दो, मर्सीफुल बनो। मन्सा सेवा में लग जाओ। सकाश दो, शान्ति दो, सहारा दो। अगर मर्सीफुल बन औरों को सहारा देने में बिजी रहेंगे तो हद की आकर्षणों से, हद की बातों से स्वत: ही दूर हो जायेंगे। मेहनत से बच जायेंगे।

16) अब दुनिया की हालत तो देख रहे हो कि कितने गिरावट की तरफ जा रही है। ऐसे समय में हर एक बच्चे को सदा मर्सीफुल स्थिति में स्थित हो आत्माओं प्रति शुभ भावना, शुभ कामना, स्नेह और रहम की भावना से सकाश देनी है तब सबका कल्याण होगा। स्व की सेवा और विश्व की सेवा के बैलेन्स द्वारा सबको मुक्ति की ब्लैसिंग दिलाओ। हे बच्चों, अब विधाता बनो, एक घड़ी भी सेवा बिना न जाये, निरन्तर सेवाधारी बनो।

शिवबाबा याद है ? *ओम् शान्ति* 13-7-13 *मधुबन*

"समाधान - स्वरूप स्थिति"

(दादी जानकी)

मीठी-मीठी बहनें, आपके आगे मैं क्या बोलूँ? आप कहेंगी, हमारी जगह पर आओ तो पता चले। तो मैं ऐसे ही यहाँ तक नहीं पहुँची हूँ बिना समस्या के, परन्तु कौन-सी ऐसी बातें ध्यान पर रहें जो समस्या चली जाये, मैं समाधान स्वरूप रहूँ। समस्या बिचारी आवे भी नहीं, वो समझ जायेगी इसको तो मेरी परवाह ही नहीं है। तो समाधान स्वरूप रहने में क्या-क्या विधि है, कभी भी टाइम वेस्ट हमारा न करे क्योंकि टाइम का कदर बहुत है। जो समस्या को टाइम देंगे तो समाधान स्वरूप बनने का टाइम कभी आयेगा। समस्या अतीन्द्रिय सुख में रहने नहीं देगी। जनक मिसल विदेही रहने की कोशिश करो तो राजाई है, ट्रस्टी रहो तो समस्या शब्द का जैसे ज्ञान ही नहीं है क्योंकि सूक्ष्म जो भी हमारे पूर्वज हैं। मैंने देखा है - ट्रस्टी और विदेही रहे हैं। दीदी-दादी आपके सामने हैं, हमारी निर्मलशान्ता दादी मतलब जो भी है पुष्पशांता दादी, बृजइंद्रा दादी मैं एक एक दादियों के साथ रही हूँ, देखा है। वो यादगार अपना बना दिया, सी फादर फॉलो फादर। समस्या तो बाबा के सामने बहुत आयी परन्तु बाबा जो है जैसा है सदा ऐसी अचल अडोल स्थिति में रहा।

निराकारी स्थिति में रहने से अन्दर जो शक्ति है सब सहज सहज है, राजयोग है इसलिए सहजयोग है। हम कोई भी इच्छा ममता के वश नहीं है। समस्या होती है कोई इच्छा या ममता से। इच्छा है वैभवों की, ममता है व्यक्ति की...

इसलिए इससे फ्री हो जाओ। करते हुए न्यारा और प्रभु का प्यारा यह अनुभव न्यारा प्यारा समस्या को आने नहीं देता है। अन्दर गुप्त न्यारा, एक एक सेकेण्ड देखो... मीठे मीठे बाबा की बातें कभी सुनी अनसुनी नहीं की है। कई हैं सुना लेकिन अमल में नहीं लाया तो अनसुनी हो गई। मैं कहती हूँ जो भी बाबा के महावाक्य हैं सब मेरे प्रैक्टिकल लाइफ में नहीं हैं तो मैं औरों के आगे समस्या हूँ। किसी को मेरी लाइफ से समस्यापन की महसूसता न हो। जो लाइफ बीती है, जो चल रही है, भले पहले न थी अभी है तो भी समझो हमारे पुरुषार्थ में कुछ गड़बड़ है।

रचता और रचना का ज्ञान सिर्फ सुनाने के लिए नहीं है, जीवन में लाने के लिए है। कोई भी ड्रामा की सीन देखा थोड़ा भी आया कि यह क्या हुआ! थोड़ा भी ख्याल किया माना ग्लानि की। इतना बाबा का आज्ञाकारी, वफादार, इमानदार बनो। कभी बाबा कहता था नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार यादप्यार... तो मैं कहती थी क्या मैं नम्बरवार में आयेंगी? जरा सोचो तो सही। बाकी जिन्होंने बाबा मम्मा को देखा है, उनको तो मैं कहती हूँ अपना कान पकड़ो। बाबा जो अन्त में कान पकड़े, उस घड़ी बाबा धर्मराज के रूप में कान ऐसे नहीं पकड़ेगा, ऐसा रूप होगा दिखायेगा तुम आज्ञाकारी, वफादार, इमानदार नहीं बनें, सजा भी खायें पद भी कम पायें। यह पहले से अभी अपने लिये सोचना है, मेरा सारे ईश्वरीय परिवार से बहुत प्यार है। बाबा के बच्चों से इतना प्यार क्यों रखती हूँ? क्योंकि मैं किसी में कमी देख नहीं सकती हूँ, यह मेरी थोड़ी कमजोरी है। परन्तु बाबा कहता है बच्ची यह तुम्हारी कमजोरी नहीं है, सच्चाई स्नेह की भावना पहुँचे। सच्चाई और स्नेह में एकदम सम्पन्न बन जायें, हमारे में कोई कमी न रहे। सम्पूर्ण निर्विकारी फिर सर्वगुण सम्पन्न कैसे बनेंगे? कोई अवगुण न रहे, नहीं तो पाप कर्म होते रहेंगे।

समस्यायें आयी सो गयी, याद भी नहीं है, समस्या मजबूत बनाती है, कभी दिल छोटी नहीं करना चाहिए। दिल छोटी करना माना समस्या पहाड़ हो जाती है। तो दिल बड़ी रख सावधान रहने से समस्या राई तो क्या पर रूई बराबर हो जाती है जो फूक से चली जाती है। इतनी अन्दर से गुप्त लगन और भावना हो जो शक्तिशाली स्थिति से समाधान स्वरूप रहें, जिससे बाबा की दुआयें, बाबा का प्यार और सबकी दुआयें काम करेंगी। बाबा का प्यार शक्ति दे रहा है, सबकी दुआयें हैं। कोई को मेरे से तकलीफ है? जिसको तकलीफ हो मेरे से तो बताना मुझे, सुनने के लिए तैयार हूँ क्योंकि मैं समझती हूँ यह भी सेवा में विघ्न है।

हम गायन और पूज्यनीय योग्य बन रहे हैं तो हमारे में कोई कमी नहीं रहनी चाहिए। बाकी थोड़ा दिन है ना बाबा कहता है समस्या छोड़ दो, समस्या हमारी हाज़िरी में खत्म हो जाये, ऐसी जीवन हो जो जहाँ पाँव रखो समस्या खत्म। बड़े अच्छे मिसाल हैं मेरे पास, तो ऐसे यादगार बनाना चाहिए ना।

प्रश्नः- शरीर का हिसाब-किताब हुआ तो सेन्टर पर बहनों ने भी सहयोग नहीं दिया, बड़ों ने और घर में लौकिक में बन्धन बहुत था और उससे फिर सेन्टर पर आयी इसलिए घरवालों ने भी सहयोग नहीं दिया उससे स्थिति काफी हलचल में आयी, अब ऐसी हलचल की स्थिति में मैं अपनी स्थिति को किस प्रकार से बनाकर रखूँ?

उत्तरः- यही बात है, शरीर पुराने हैं, चलो कोई भी कारण से पूर्व जन्म के हिसाब-किताब से यह हमारा शरीर भी कितने समय से बीमार माना कोई न कोई बात एक जाती है, दूसरी आती है। देखो हमारी बैंगलोर वाली सरला, कितना समय हुआ है खटिया पर है, पर स्थिति अच्छी है। स्थिति अच्छी है तो सहयोग भी मिलता है। स्थिति गड़बड़ वाली होती है तो सहयोग मिलते भी स्वीकार नहीं करती है। थैंक्स करें, जो भी सहयोग मिलें। नहीं मिलता है, कोई हर्जा नहीं है दुःखी न होवें। कर्मभोग, हिसाब-किताब... समझके। यह बात गैरंटी से कहती हूँ, ऐसा कोई दिन नहीं होगा जो शरीर में कोई खिटपिट न हो, सबको पता है। एक बार बाबा ने मुझे कहा था प्रकृति साथ देगी, उस दिन से प्रकृति साथ दे रही है। प्रकृति भी साथ तब देगी जब अन्दर की अपनी नेचर ऐसी रखें। प्रकृति शब्द दूसरों के भाव-स्वभाव हैं, अगर मेरे में सहनशक्ति की कमी है कोई बात मेरे से सहन नहीं होती है तो गलती मेरी है। किसी का स्वभाव मेरे से सहन नहीं होता है, यह परीक्षा आती है स्वभाव की, जो मेरे में सहनशक्ति न हो मैं चिल्लाऊं, इससे वो बीमारी और बढ़ जाती है। पर सहनशक्ति से बीमारी आई है, सहन करके चलने से प्रकृति

साथ देती है। जिसको बाबा के महावाक्यों का कदर है तो कर्मभोग खत्म हो जाता है। कदर नहीं है तो कर्मभोग बढ़ता है, हिसाब-किताब फिर बाकी भी स्वभाव...। अभी जो हिसाब-किताब बनता है उसका कारण है अपना नाजुक स्वभाव है, कोमल या तेज स्वभाव है। कोमल है तो सहन नहीं कर सकते हैं और स्वभाव तेज है तो दूसरो को दु:ख होता है। अगर ऐसा बोलते हैं कि जब यह मुझे बोलती है तो मुझे बड़ा दु:ख होता है, तो यह भी हिसाब-किताब है। अच्छा।

दूसरा क्लास

"त्याग और तपस्या की मूर्ति बनो तो सेवायें अपने आप होंगी - दादी जानकी

बाबा की दिल को खुश करने के लिए, सारी उम्र सफल करने के लिए सेवा में सदा हाजिर रहे हैं। बाबा के जो अच्छे-अच्छे महावाक्य हैं वो कभी भूलते नहीं हैं, बाकी कोई बात याद आती नहीं है। मैं कोई को भी फिकर में या भारी नहीं देखना चाहती हूँ। कोई घड़ी भी कोई कारण से भारी हो जाये, तो भी सेकेण्ड में हल्का हो जाओ। कोई बात नहीं, लेट गो। शान्ति से काम लो। यह एक्टिंग नहीं है रीयली राजाई है। बाबा ऐसे ही राजा नहीं बना, बाबा को गालियाँ भी खानी पड़ी। बच्चों के भी कई प्रकार के खेल देखे। अच्छे अच्छे बच्चे जो बाबा बाबा कहें, वो कल बाबा कौन है? मैं तो जा रहा हूँ...। मेरे को भी कहने लगे तुम सब मुर्ख हो, अपनी जीवन गँवायेगी, तुम भी सोचो अपना। ऐसे अच्छे-अच्छे को भी संशयबुद्धि होता हुआ देखा है। इससे बचने लिए संग और अन्न की बहुत सम्भाल चाहिए।

बाबा ने जो परहेज सिखाई है जितना उस परहेज में रहे हैं उतना फायदा है। पहले-पहले जब सेवा में निकले, कुछ भी खाने को नहीं होता था सिर्फ रोटी बनाके नमक लगाके खाते थे, पर फिर भी वो दिन बड़े प्यारे थे, उन दिनों में बहुत अच्छा लगता था। त्याग, तपस्या से जो सेवायें हुई हैं, वह अभी तक भी काम आ रहा है। अपने आप जिस समय जो चाहे वो हो जाता है, कभी भूल से भी कुछ मांगना नहीं पड़ा। पहले टूथ ब्रुश भी नहीं यूज़ करते थे, नीम से ही दांतून करते थे। तो जो बाबा ने कहा है किया है, कराया है। अभी भी मैं आपको कहती हूँ समय और संकल्प को सफल करना। एक भी संकल्प मेरा निष्फल न जाये। बाबा कहता है ''मैं बैठा हूँ'' हो जायेगा... बड़ी बात नहीं है, यह अनुभव करो। खुद खुदा... हमारी खिदमत में हाज़िर है। बाबा मदद करता है तभी तो हम बाबा के मददगार बने हैं ना। मददगार भी क्या बनें हैं, पर अपना भाग्य बना रहे हैं। तो मेरा भाग्य है मुझे ऐसी भट्ठी में बुलाते हो। पता नहीं कल नहीं हूँगी तो! इसलिए...। आप सबकी उम्र भी ऐसी सफल हो जाये। सिर्फ त्याग वृत्ति, तपस्या वृत्ति की मूर्ति रहो तो सेवायें आपेही होती और बढ़ती रहेंगी। कई प्रकार की सेवायें हुई हैं परन्तु बड़ी सुख शान्ति प्रेम से सेवा हुई है, मैं अभी यही चाहती हूँ जैसे हमने निमित्त बनके सेवायें की हैं, सबने मिल करके की हैं वैसे करें तो कहीं कोई प्रॉब्लम नहीं होगी।

संगठन में बड़ा बल मिलता है, तो अभी इस भट्ठी से स्वत: सब बातों से फारिग़ हो, फ्री होके जाओ। अभी यह गहरा पुरुषार्थ करके एक दो से सन्तुष्ट होने की घड़ियां हैं। पुरुषार्थ में ''कैसे'' शब्द न निकलें। अभी गुप्त पुरुषार्थी, तीव्र पुरुषार्थी, रीयल पुरुषार्थी बनके जाओ। पुरानेपन का दाग जरा भी न रहे तब फरिश्तेपन का वायब्रेशन सारे विश्व भर में जायेगा, आप निमित्त बने हुए द्वारा। सारी विश्व का ध्यान हमारे मधुबन में है और मधुबन से जो वायब्रेशन जाता है वह कहाँ कहाँ पहुँचता है इसलिए अपने ऊपर यह दया करो तो दुआ बाबा की है। और मैंने देखा है बाबा की दुआयें बहुत काम करती हैं। जो सेवा करो वो बाबा की दुआ से सफल हो रही हैं, फिर सबके दिल से ऑटोमेटिक दुआ निकलती है, बाबा गुप्त आत्मा को देखता है, पर परमात्मा की दुआयें हैं तो सबको प्राप्ति हो रही है, वो दुआयें हम बच्चों को मिल रही हैं। अन्तिम घड़ियां हैं, फरिश्ता बन जायें जल्दी, आज ही यह काम करेंगे ना। अच्छा।

"कदम-कदम पर श्रीमत बुद्धि में रहे तो स्थिति अचल अडोल बन जायेगी" (दादी जानकी)

त्याग का महत्व बहुत है, त्याग से ही तपस्वी मूर्त बने हैं, सेवायें हो रही हैं। लेकिन सेवा में जो विघ्न आते हैं, कभी सम्बन्ध में हलचल होती है, उसमें भी त्याग का ही महत्व कहेंगे। त्याग की कमी के कारण ही यह सब बातें होती हैं। त्याग से तपस्या विघ्न-विनाशक बनाती है। त्याग माना हम पास हो गये, पार हो गये, यह प्रैक्टिकली हो तो तपस्या अच्छी होगी, मजा आयेगा। इससे जो सेवा होगी उसमें मेहनत नहीं लगेगी, पैसे का नहीं सोचना पड़ता है। मैंने देखा बहनों को थोड़ा पैसे की चिंता होती है, सेवा में चाहिए तो सही ना। सेन्टर खोलते जा रहे हैं तो पैसे की थोड़ी चिंता रहती होगी। बाकी हमको कभी चिंता हुई नहीं है।

त्याग, तपस्या, सेवा में त्याग पहले है। निराकार, निर्विकारी, निरहंकारी में पहले निराकारी है। हर बात में प्रैक्टिस करो, छोड़ो नहीं। छोड़ो तो छूटे। थोड़ा भी कोई बात को पकड़के रखना तो निर्विकारी नहीं है। चेक करो कोई भी सूक्ष्म व्यक्ति में मोह या वैभव में लोभ तो नहीं है? निराकारी स्थिति, निर्विकारी बना देती है। अहंकार बहुत सूक्ष्म है, थोड़ा भी कोई बात से अहंकार पैदा हुआ तो चारों ही उसका साथ देते हैं। भले कहने में लास्ट में आता है काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार पर अहंकार, हरेक चेक करे अपने अन्दर कोई बात में अंश मात्र भी अगर अहंकार है, तो बाकी भी वो चारों चीज़ें शामिल हैं। बाबा हर मुरली में इसकी गहराई समझाता रहता है। तो बाबा का यही ज्ञान बुद्धि में कूट-कूटके भरा हुआ हो तभी निरंहकारी बनेंगे। सब बात में निराकारी, निरहंकारी... इस स्थिति में रहने की आदत अगर थोड़े समय के लिये भी पड़ गई तो समझेंगे बाबा की मेहरबानी है। बाबा का मिला हुआ वरदान काम कर रहा है। मैं नहीं कुछ करती हूँ। मैंने किया या करती हूँ या मुझे ही करना पड़ता है, यह भी अहंकार है। कैसे करूँ? क्या करूँ?... यह भी निश्चय की कमी है।

किसी भी बात में कोई भी प्रकार का आधार लेना माना अभी तक भी हम निराधार नहीं बनें। कोई भी बात में थोड़ा भी बुद्धि हलचल में आई तो निराधार नहीं कहेंगे। फाईनल अचल-अडोल स्थिति बनाने के लिए कदम-कदम बाबा की श्रीमत हमारी बुद्धि में हो अर्थात् हमारे कदम में पदम जमा करके अपने को पदमापदम भाग्यशाली बनाना। कोई भी हालत में कभी भी, कहीं भी कोई भी कमजोरी का चिन्ह न रहे, कमी न हो क्योंकि सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण अभी बनना है। आपेही पूज्य, आपेही पुजारी... हमारे लिये हैं।

16-11-15

"बाबा हर बच्चे की अवस्था को चेक करके फिर डायरेक्शन देता है, उसी अनुसार बाबा की मुरलियां चलती हैं" (गुल्जार दादी)

जब कोई ग्रुप बाबा से मिलने आता है तो बाबा उस ग्रुप के एक एक बच्चे की अवस्था को पहले चेक करता है, क्योंकि हर एक की अवस्था तो नीचे ऊपर होती रहती है ना! तो बाबा पहले चेक करता है कि इस समय यह किस स्थिति में है? फिर बाबा हर बच्चे के पास्ट को भी थोड़ा चेक करता है कि जिस समय वह बाबा के पास आई उस समय क्या हलचल थी, क्योंकि उस समय भी हलचल तो होती है ना! हलचल भी कई प्रकार की होती है, उसे भी बाबा चेक करता है। फिर बाबा देखता है कि इस बच्चे की अभी वृत्ति लाभ लेने की है या मिक्स है? बाबा जैसा बनाना चाहता है वैसा यह बन सकेगा! जब मधुबन में खास आते हैं तो अपनी स्थिति पर भी तो खास ध्यान रखना चाहिए ना! बाबा तो उनके चलने फिरने, क्लास में बैठने से ही चेक कर

लेता है और समझ जाता है कि बच्चे की टोटल अवस्था क्या रहती होगी ? अगर अच्छी अवस्था वाला बच्चा है तो भी बाबा जान लेता है कि यह महारथी है, घोड़ेसवार है या प्यादा है। मैजॉरिटी तो महारथी वा घोड़ेसवार हैं। तो बाबा चेक करता है कि इस ग्रुप में महारथी कितने हैं और घोड़ेस-वार कितने हैं ? फिर उसी अनुसार बाबा डायरेक्शन देता है, ग्रुप के अनुसार ही बाबा की मुरली चलती है। बाबा बच्चों के वायब्रेशन से ही चेक कर लेता है कि यह ग्रुप विशेष किन बातों के सुनने वा ग्रहण करने के पात्र है। फिर उस ग्रुप को उसी अनुसार ही हैण्डलिंग देता है। बाबा जान लेता है कि इस ग्रुप को किन बातों में भरना है। बाबा पहले से बताता नहीं है लेकिन बाबा की मुरलियों का सार उसी अनुसार होता है। बाबा समाचार सुने या न सुने। ऐसे नहीं मैं बाबा को किसी के बारे में कुछ बताऊं फिर बाबा मुरली चलायेगा, ऐसा नहीं है। लेकिन किस ग्रुप को क्या चाहिए, वह बाबा के पास पहले से ही तैयार रहता है कि इस ग्रुप को विशेष इस प्वाइंट का बल चाहिए, उसी अनुसार मुरलियां चलाता है और मुरली चलाने के बाद फिर उसकी रिजल्ट भी देखता है। लास्ट में जब बच्चे चले जाते हैं तो भी चेक करता है कि इन्हों का क्या हालचाल रहा! बाबा मुझे सब बातें नहीं सुनाता है, कुछ समाचार सुना देता है कि इस ग्रुप का ऐसे था! लेकिन मुरलियों से पता पड़ता है कि इस ग्रुप की क्या विशेषता थी और इस ग्रुप की क्या चाहना थी। तो बाबा की मुरली में यह सब कुछ समाया हुआ होता है फिर जो भी कैच करे, नहीं करे। बाबा मुरली में सब प्रकार के इशारे दे देता है फिर उससे जानने वाले जान लेते हैं, और उसी अनुसार वह भी हैण्डल करते हैं। जो दादियां भी हैं, वह भी बाबा के उस सार को कैच करके फिर उसी अनुसार हैण्डलिंग देती हैं। अच्छा।

दूसरा क्लास – यह नुमाशाम का कितना सुन्दर समय है, जो हम सब बाबा से मीठी-मीठी रूहरिहान भी करते हैं और आपस में सब सखियां मिलकर बाबा की मीठी-मीठी बातें एक दो को सुनाते हैं। आज हमारे पास बाईचांस, कारणें अकारणें दादी जानकी भी आकर पहुंची हैं। (लोटस हाउस में) हमारा आपस में यह कितना अच्छा संगठन है। इस संगठन में आप लोगों को बहुत याद कर रहे हैं क्योंकि दादी का हमेशा संकल्प रहता है कि हम सखियां आपस में मिलकर कुछ रूहरिहान करें। तो हम सबका कितना अच्छा भाग्य है। जो दुनिया वाले भाग्य समझते हैं उससे भी ज्यादा हर एक अनुभव करता है। तो हमारा यही संकल्प है कि हम लोग आपस में मिलकर ऐसी ऐसी टापिक्स पर रूहरिहान करें जो नशा चढ़ायें और किसी भी प्रकार की माया को आने न देवें।

बाबा कितना प्यारा है, जो हर एक बच्चा कहता है मेरा बाबा, मीठा बाबा। तो हम सुनते हैं, जब कोई बात करता है तो पहले कहता है ओम् शान्ति, फिर कहेगा मेरा बाबा। मेरा बाबा मुझे देख रहा है। बाबा मेरे से बात कर रहा है। पहले बाबा अक्षर आयेगा फिर दूसरी बात आयेगी। तो हमको बहुत खुशी होती है कि हमारा बाबा है। यह जो फीलिंग है मेरा बाबा, यही हम सबको आगे बढ़ाती है। हर एक के दिल से निकलता है, जिगर से निकलता है मेरा बाबा। तो यह मेरा बाबा कभी नहीं भूले। चाहे बाबा एक मास के बाद मिले या कितना भी समय के बाद मिले लेकिन हर एक के दिल से मेरा बाबा निकलता है।

देखो, हम सब कितने भाग्यशाली हैं जो भगवान भी हमारे भाग्य का वर्णन करता है। मेरे बच्चे, मेरे बच्चे कह करके कितना बाबा हम लोगों को प्यार करता है। मेरे बच्चे ऐसे हैं, मेरे बच्चे ऐसे हैं। जब बाबा मेरे बच्चे कहता है तो मुझे भी बहुत अच्छा लगता है। बाबा के मुख से जब मेरे बच्चे निकलता है तो उस समय बाबा का फेस देखने वाला होता है। तो यह जो मिलन होता है, यह बहुत सुन्दर है और यह कभी-कभी होता है। रोज़ नहीं होता है। तो हम बड़े भाग्यवान हैं जो बाबा के मुख से हमारे लिए महावाक्य निकलते हैं इतना बड़ा भाग्य हमारा नूंधा हुआ है।

(दादी जानकी जी कह रहे हैं यह हमारा मिलन कितना अच्छा है, ऐसा अनुभव तो हर एक को होवे। दादी अभी और कुछ बोलती है तो मैं खुश होती हूँ, सारे विश्व में दादी का आवाज माना बाबा का आवाज सब दादी का आवाज सुनना चाहते हैं। दादी को याद किया माना बाबा को याद किया)

गुल्जार दादी ने कहा नहीं दादी, आपको भी याद किया तो भी बाबा को याद किया। (जानकी दादी ने कहा दादी आपको याद किया तो बाबा याद आयेगा और मेरे को याद करेंगे तो आपके साथ बैठने में जो मुझे आनंद आ रहा है वह याद आयेगा। मेरे को तो आपके साथ बैठने में भी बाबा देख रहा है कि यह किससे मिल रही है) गुल्जार दादी ने कहा नहीं, बाबा बहुत खुश होता है जब हम सब सखियां आपस में मिलती हैं, तो बाबा को बहुत अच्छा लगता है। बाबा कहता है यह दिल में फोटो निकालके रखो। अच्छा। ओम् शान्ति।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

"कुछ भी हो जाए दिलशिकस्त नहीं बनो, दिल को आराम में रखो"

1) बाबा हम बच्चों को कहते बच्चे तुम मेरे नूरे रत्न हो, नूरे जहान हो। जहान के नूर हो। इन महावाक्यों में कितना रहस्य भरा हुआ है। सदा यह ध्यान रहे कि जहाँ हमें देख रहा है। भक्ति में ख्याल करते कि भगवान देख रहा है लेकिन अभी हम कहते जहान हमें देख रहा है। प्रैक्टिकल में देखा जाता है कि सारे जहान का ध्यान हम लोगों पर है। पवित्रता के योगबल से, दैवीगुणों के आधार से हम सतयुगी दैवी राजधानी स्थापन कर रहे हैं। भगवान करा रहा है। यह आटोमेटिक मुख से निकलता है। पवित्रता के बल से करा रहा है। हमें एक को याद करके विश्व में एकता लानी है। यह कार्य भगवान करा रहा है, इंसान के बस की बात नहीं है। जास्ती गोरखधन्धे में जाने से, व्यर्थ सोचने से माथा खराब होता, हरदम दिल खुश, दिमाग ठण्डा हो तो बाबा अपना काम अच्छा करा लेगा। दिल से बाबा का काम करो तो बाबा की और परिवार की मदद मिलती है। गर्म दिमाग वाला कभी कोई काम नहीं कर सकता। ठण्डे दिमाग से काम अच्छा होगा। गर्म दिमाग वाला खुद भी बिगड़ेगा, काम भी बिगाड़ेगा। वह दिल को भी सुस्त, दुखी, निराश बना देगा इसलिए कुछ भी हो जाए हमें दिलशिकस्त नहीं होना है, दिल को आराम में रखना है। एसा कोई काम नहीं करना है जो दिल खाये। आराम की नींद न आये। किया हुआ खाता है। इसलिए सिर्फ अपने दिल को खुश करने के लिए या जिसके साथ प्रेम है। उसको खुश करने के लिए नहीं करो लेकिन भगवान को खुश करने के लिए करो। मेरी दिल या फलाने की दिल खुश हो, यह सोचकर कुछ किया तो सूक्ष्म गलतियां हो सकती हैं। बाबा क्या कहता है, ज्ञान क्या कहता है, यह सोचकर किया तो कोई गलती नहीं हो सकती। आत्मा में शक्ति तब आती है जब राइट काम होता है- बिगड़ी को बनाने वाला, सत्य धर्म की स्थापना अर्थ कोई काम होता है। तो सदा याद रहे कि मेरे से ऐसा कोई काम न हो जो बनी हुई बात भी बिगड़ जाए।

2) लोग समझते हैं जिसकी उम्र बड़ी होती है उसका दिमाग काम नहीं करता। लेकिन भगवान के जो बच्चे हैं, उनको भगवान की गुप्त शक्ति मिलती रहती है। जो सोचते हैं कि इनको इतना निर्भय, बड़ी दिल-वाला बनाने वाला कौन है। हमारे में इन्सानियत का भी अंश न हो। हम छोटी-मोटी आशायें रखकर अपने आपको खुश न कर लें। बुद्धि में जरा भी किसी चीज की आकर्षण न हो। इस संसार में कुछ भी अच्छा नहीं। अच्छा वह है जो कोई इच्छा न हो। घर जाना, उपराम रहना अच्छा है। बाबा के जो बच्चे गुम हो गये थे, जो मूर्छित हो गये थे, वह सुरजीत हो गये, यह अच्छा लगता है। यह फैमिली अच्छी लगती है, बाकी कुछ अच्छा नहीं। तो हर एक अपने दिल से पूछे कि मुझे क्या अच्छा लगता है? अच्छा यह लगता है कि योगयुक्त स्थिति रहे। कोई भी बात हो जाए हमें कोई हिला न सके। जो भगवान ने महावीर बनने का पार्ट दिया है वह अच्छा लगता है। पास विद आनर होना अच्छा लगता है। ड्रामा की नालेज के आधार से अपने जीवन की इतनी रक्षा करो जो मान-अपमान का लेश भी न आये। ड्रामा की नालेज इतनी अच्छी है जो एक सेकेण्ड भी किसी बात का ख्याल नहीं चलता। अगर हम अपनी स्थिति को अचल बनाकर रखना चाहते हैं तो तीन बातें साथ हों:- 1. सहनशक्ति। 2. समेटने की शक्ति और 3. समाने की शक्ति। यह तीनों शक्तियां साथ हैं तो ड्रामा पर अडोल रह सकते हैं। अगर एक भी शक्ति कम है तो स्थिति हिल सकती है। अच्छा-ओम् शान्ति।